बलात्कार और भ्रष्टाचार का समाधान

मज़दूर मोर्चा का 1-15 जनवरी 2013 के अंक में बलात्कार के बहाने व्यवस्था पर उगता गुस्सा, नज़ला सारा पुलिस पर इस एक गैंगरेप पर हंगामा क्यूं है बरपा; न्यायपालिका भी कम दोषी नहीं, शीला और पुलिस के बीच क्यों ठनी, तथा बलात्कार-पहले समाज बदलिये लेख पढ़े। इन लेखों में जनता का आक्रोश अन्याय, व्यभिचार के खिलाफ कुछ तुरन्त करने की चेतना, पुलिस की मज़बूरी सक्रियता और प्रशासन को निष्क्रियता और सक्रियता, असुरक्षितता, राजनैतिक असहायता, ड्रामेबाजी, सामाजिक आर्थिक एवं कानूनों में बदलाव लाने इत्यादि पर प्रकाश डाला गया। बसों में बदलाव, ड्राइवरों में बदलाव, घरों स्कूलों, में बदलाव, पहनावे में बदलाव फिल्म, टी.वी. इन्टरनेट में बदलाव इत्यादि की बात भी कही गई। इस सब के बावजूद बलात्कार पर काबू पाने की उम्मीद नज़र नहीं आ रही है। मीडिया को मदद से कभी भ्रष्टाचार, कभी बलात्कार कभी नशाखोरी, का मुद्दा उठता है। जनता का हुआ आक्रोश कुछ सांस लेता है कि मीडिया भी विषय को बदल लेता है और समस्या फिर वही के वही। या कुछ थोड़ा बहुत आश्वासन या बदलाव।

हत्या, चोरी, व्यभिचार झूठ, नशाखोरी इन सब की जड़ एक ही है। इनका कारण एक ही है। इसलिये उपाय भी एक ही है। ये सारे सामाजिक मुद्दे मनुष्य के साथ जुड़े है। मनुष्य की मानसिकता से जुड़े है। मानसिकता ठीक होगी तो न कोई हत्या करेगा, न कोई चोरी करेगा, न कोई व्यविचार करेगा, न कोई नशा खोरी करेगा, न कोई झूठ बोलेगा। समाज में नैतिकता स्थापित होगी। भगवान बुद्ध ने नैतिकता को ही धर्म का आधार बताया था। उन्होंने जीवन भर नैतिक मूल्यों पर ही बल दिया था। उन्होंने पांच-शीलों को पंचशील का नाम दिया। वे अपने शिष्य को पहले ये पांच प्रतिज्ञा दिलवाते थे। 1.) मैं अकारण किसी जीव की हत्या नहीं करूंगा, 2.) मैं प्रतिज्ञा लेता हूं कि कभी झूठ नहीं बोलूंगा, 3.) मैं प्रतिज्ञा लेता हूं कि कभी व्यभिचार नहीं करूंगा, 4.) मैं प्रतिज्ञा लेता हूं कि कभी चोरी नहीं करूंगा, 5 मैं प्रतिज्ञा लेता हूं कि कभी कच्ची पक्की शराब, अफीम, गांजा, बीड़ी-सिगरेट, नशे की दवाई का सेवन नहीं करूंगा। जो बुद्ध का साधक इन पांच शीलों का पालन करता था वह ही ध्यान में पुष्ट हो पाता था तथा वह ही अपने मन को इन विकारों से शुद्ध कर पाता था। ये सारे विकार मन में होते हैं और इन्हें ठीक करने के सारे उपाय आज बाहर ढूंढे-जा रहे हैं। इन बाहरी उपायों का बहुत सीमित महत्व है। वास्तव में तो समाज में नैतिक मूल्यों को स्थापित करने की आवश्यक्ता है। आन्तरिक मन की शुद्धि की आवश्यक्ता है।

कौन करगा नैतिक मूल्यों की स्थापना? यह काम हमारे देश में हमारे धार्मिक गुरु करते थे। स्कूलों में नैतिकता का विषय अनिवार्य होता या किन्तु आज शिक्षा में नैतिकता के विषय को या तो स्वैक्षिक बना दिया गया है या हटा दिया गया है। आज उसी का परिणाम है कि समाज में नैतिक मूल्य निरन्तर गिरते जा रहे हैं। यदि हम समाज से इन बुराइयों को निकालना चाहते हैं तो नैतिक शिक्षा को स्कूलों में अनिवार्य किया जाये। धर्म गुरुओं को कर्म कांड के स्थान पर नैतिक मूल्यों को सिखाने पर बल दिया जाये। अनैतिक कहानियों को, सीरियलों पर, फिल्मों पर, पुस्तकों पर रोक लगाई जाये। धर्म गुरुओं को स्वयं नैतिक मूल्यों पर चलना चाहिए जो धर्मगुरु स्वयं नैतिक मूल्यों पर नहीं चलते हैं उनका समाज को बहिष्कार करना चाहिए। दान केवल उन्हीं धर्म गुरुओं को देना चाहिए जो विद्वान हैं, जो त्यागी है,जो वैरागी है, जो राग, द्वेष और मोह से मुक्त हैं। जो पाखंड और अन्धविश्वास से परे हैं, जो सुकर्म पर विश्वास रखते हैं, जो भाग्यवाद से दूर है।

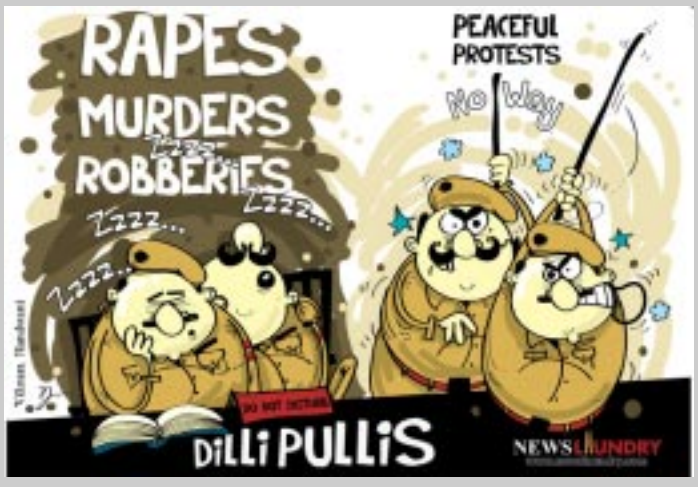

कौन करगा नैतिक मतूल्यों की स्थापना? यह काम हमारे देश में हमारे धार्मिक गुरु करते थे। स्कूलों में नैतिकता का विषय अनिवार्य होता या किन्तु आज शिक्षा में नैतिकता के विषय को या तो स्वैक्षिक बना दिया गया है या हटा दिया गया है। आज उसी का परिणाम है कि समाज में नैतिक मूल्य निरन्तर गिरते जा रहे हैं। यदि हम समाज से इन बुराईयों को निकालना चाहते हैं तो नैतिक शिक्षा को स्कूलों में अनिवार्य किया जाये। धर्म गुरुओं को कर्म कांड के स्थान पर नैतिक मूल्यों को सिखाने पर बल दिया जाये। अनैतिक कहानियों को, सीरियलों पर, फिल्मों पर, पुस्तकों पर रोक लगाई जाये। धर्म गुरुओं को स्वयं नैतिक मूल्यों पर चलना चाहिए जो धर्म गुरु स्वयं नैतिक मूल्यों पर नहीं चलते हैं उनका समाज को बहिस्कार करना चाहिए। दान केवल उन्हीं धर्म गुरुओं को देना चाहिए जो विद्वान हैं, जो त्यागी है,जो वैरागी है, जो राग, द्वेष और मोह से मुक्त हैं। जो पाखंड और अन्धविस्वास से परे हैं, जो सुकर्म पर विश्वास रखते हैं, जो भाग्यवाद से दूर है।

पुस्तकों पर रोक लगाई जाये। धर्म गुरुओं को स्वयं नैतिक मूल्यों पर चलना चाहिए जो धर्मगुरु स्वयं नैतिक मूल्यों पर नहीं चलते हैं उनका समाज को बहिष्कार करना चाहिए। दान केवल उन्हीं धर्म गुरुओं को देना चाहिए जो विद्वान हैं, जो त्यागी है,जो वैरागी है, जो राग, द्वेष और मोह से मुक्त हैं। जो पाखंड और अन्धविश्वास से परे हैं, जो सुकर्म पर विश्वास रखते हैं, जो भाग्यवाद से दूर है।

समाज में नैतिक मूल्यों को स्थापित करना ही आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। ये नैतिक मूल्य ही समाज को इन सभी बुराइयों से हमें स्वयं बचा सकते हैं। इसके लिये हमें किसी सरकार, किसी पुलिस, किसी कड़े कानून की आवश्यक्ता नहीं। हम सबको स्वयं आगे आना है। प्रत्येक मानव को अपनी-अपनी जिम्मेदारी लेनी होगी। भ्रष्टाचार और बलात्कार को हम केवल बाहरी कानून से समाप्त नहीं कर सकते। इन्हें समूल नष्ट करने के लिये हमें अपने अंदर के कानून को लागू करना होगा। और वह अन्दर का कानून हमारी आंतरिक नैतिक शक्ति ही होगी। भारत इन नैतिक मूल्यों के लिये दुनिया में जाना जाता रहा है, किन्तु आज वह अपनी संस्कृति को भूल कर ऐसो संस्कृति की लपेट में आ गया कि भ्रष्टाचार और अनाचार की समस्या में जल रहा है। आइये हम सब चाहे हम किसी भी धर्म को मानने वाले हो यह प्रतिज्ञा ले कि मैं दुराचार नहीं करूंगा, मैं भ्रष्टाचार नहीं करूंगा तो अवश्य ही समाज सुधरेगा। विश्व में शांति होगी विकास होगा। भारत फिर से दुनियां को अंधकार से निकालने का मार्ग दिखायेगा। भारत दुनिया का धर्मगुरु बनेगा।

- डॉ.लाल सिंह

गतांक की चीर-फाड़

मज़दूर मोर्चा का 1-15 जनवरी 2013 का अंक मिला जिसमें स्थानीय, क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय समसामयिक महत्वपूर्ण मुद्दों पर लेख पढ़ने को मिले। दिनांक 16 दिसम्बर को चलती बस में 23 वर्षीय पैरा मेडिकल की छात्रा के साथ हुए नृशंस सामूहिक बलात्कार व उसके साथ हुई हद दर्जे की हैवानियत ने देश को झकझोर कर खड़ा दिया और दिल्ली समेत पूरे देश में विद्रोह की सी स्थिति बन गई। मीडिया ने इस दरिंदगी को खूब प्रसारित किया। विपक्षी राजनीतिक दलों व एनजीओ तथा सड़क पर उतरी भीड़ ने बलात्कारियों को तुरंत फांसी की सजा देने की मांग करते हुए संसद का विशेष सत्र तुरंत बुलाकर कानून में संशोधन करके बलात्कार के मामले में फांसी की सज़ा का प्रावधान करने की मांग की। परंतु किसी भी राजनीतिक दल ने अपनी सुरक्षा में तैनात पुलिस कर्मियों की संख्या में कमी करके उनको जनता की सुरक्षा में लगाने की घोषणा नहीं की और ना ही किसी ने संकल्प लिया कि जिस सांसद या विधान मंडल सदस्य अथवा कार्यकर्ता पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगा हो उसको आगामी चुनाव में उम्मीदवार नहीं बनायेंगे। समस्या की सारी जड़ पुलिस को मानकर उसकी सब जगह आलोचना की गई लेकिन न्यायालयों में लम्बित बलात्कार के मामलों के लिये जिम्मेवार न्यायपालिका पर किसी ने भी अंगुली नहीं उठाई। उल्टा न्यायपालिका ने सारा दोष पुलिस पर थोप दिया। अगर उन लम्बित मामलों में इसी वर्तमान कानून के अन्तगर्त ही न्यायालयों द्वारा दोषियों को सज़ा शीघ्र दी जाती तो बलात्कार की संख्या में कमी हो सकती थी। किसी ने भी इस समस्या के मूल कारण को समझने की कोशिश नहीं की। इस सम्बन्ध में 'बलात्कार के बहाने व्यवस्था पर उगला गुस्सा, नज़ला सारा पुलिस पर', 'इस एक गैंगरेप पर हंगामा क्यूं है बरपा', 'न्यायपालिका भी कम दोषी नहीं', 'महिला सशक्तिकरण और अपराध', 'बलात्कार-पहले समाज बदलिये' तथा 'बलात्कार के झूठे मामलों से बेख़बर हैं सभ्रांत आंदोलनकारी' प्रकाशित लेख प्रशंसनीय हैं जिनमें इस समस्या के विभिन्न पक्षों का सटीक विश्लेषण किया गया है। वास्तव में बलात्कार की समस्या की जड़ें हमारे समाज व संस्कृति में हैं। हमारा समाज पुरुष प्रधान है जिसमें नारी की स्थिति दोयम दर्ज़े की है।

महिलाओं के प्रति हो रही हिंसा उसी मानसिकता की देन है। आरएसएस के सरसंघ चालक मोहन भागवत ने कहा कि देश में दुष्कर्म की बढ़ती घटनाओं की वजह पश्चिमी प्रभाव है। इसलिये शहरी इलाकों में ऐसे वाकये सामने आ रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्र इससे बचा हुआ है जबकि सच्चाई यह है कि गांवों और कस्बों में बलात्कार के ज्यादा मामले होते हैं। गांवों में दबंग तबका किसी समुदाय विशेष को सबक सिखाने के लिये, बलात्कार को एक हथियार की तरह इस्तेमाल करता है। महाराष्ट्र समाजवादी पार्टी के नेता अबू आजमी ने कहा कि उसे ऐसे आदमी के साथ (सामूहिक बलात्कार की पीड़िता को)रात में घूमने की क्या जरूरत थी, जो उसका रिश्तेदार नहीं था।

आंध्र प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बोत्सा सत्यनारायण ने कहा कि महिलाओं को रात के अंधेरे में नहीं निकलना चाहिए। मध्यप्रदेश के भाजपाई उद्योगमंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि महिलाओं को मर्यादा में रहना चाहिए। अगर कोई महिला अपनी सीमाएं लांघती है तो उसे दंड मिलना तय है। उपरोक्त कथनों में उनकी परम्परावादी व पुरुषवादी सोच झलकती है। ऐसा करने पर औरतें न कभी कॉलेज जा सकेंगी और न ही नौकरी कर सकेगी। छत्तीसगढ़ के भाजपाई गृहमंत्री ननकीराम ने कहा कि पूरे महीने में इतनी ऐसी घटनाएं होना कहीं न कहीं ग्रह-नक्षत्रों से प्रभावित हो सकता है। राजस्थान में अलवर से भाजपा विधायक बनवारी लाल सिंघल ने कहा कि स्कूली छात्राओं के स्कर्ट पहनने से यौन उत्पीड़न के मामले बढ़ते हैं, उन्हें सलवार सूट या शर्ट ट्राउजर पहनना चाहिए। छत्तीसगढ़ महिला आयोग की अध्यक्ष विभा राव ने कहा कि वे पश्चिमी संस्कृति को अपनाकर पुरुषों को गलत संदेश दे रही हैं। उनके कपड़ों और उनके व्यवहार से पुरुषों को गलत सिग्नल मिलते हैं।

भाजपा नेता और मध्य प्रदेश के नगरीय विकास मंत्री बाबू लाल गौर ने कहा कि पूरे देश में पुरुषों और स्त्रियों के लिये एक ड्रेसकोड निर्धारित किया जाना चाहिए। अगर ऐसा है तो कचरा बीनने वाली महिलाओं के साथ तो बलात्कार बिल्कुल नहीं होने चाहिए, क्योंकि वे फटे-चीथड़े कपड़े पहनती हैं और उनके शरीर से बदबू भी आती है। पारंपरिक वेशभूषा वाली, दब्बू और निरीह दिखनेवाली लड़कियां तथा छोटी बच्चियां इस अपराध की ज्यादा शिकार होती हैं। तथाकथित धर्मगुरु आसाराम ने कहा कि बलात्कार की शिकार हुई बिटिया भगवान का नाम लेकर अपराधियों मे से एक-दो का हाथ पकड़कर उन्हें भाई कह कर बुलाती तो उसकी इज्जत और जान भी बच सकती थी। ताली एक हाथ से नहीं बजती। क्या ऐसा समाज अच्छा है जहां स्त्री को गिड़गिड़ाकर अपनी इज्जत की रक्षा करनी पड़े। समाज का नेतृत्व करने वाले इन लोगों के विचार देश और समाज को पीछे की ओर धकेलते हैं। इसके अतिरिक्त पूंजीवादी समाज व मीडिया ने नारी को महज एक वस्तु का दर्जा दे दिया है। यौन अपराधों पर नियंत्रण करने के लिए पुरुषवादी सोच को बदलने, समाज व संस्कृति तथा आर्थिक व्यवस्था में सुधार करने और कानून व्यवस्था व सजा जितनी अभी है उसी को त्वरित अमल में लाकर दोषी पाए गए व्यक्तियों को शीघ्र सज़ा देने की आवश्यकता है जिससे यौन उत्पीड़न करने का साहस कम हो जाए। लेख 'अन्ना, अरविंद और भ्रष्टाचार मुक्त भारत का सपना' में लेखक स्वतंत्र मिश्र ने अन्ना और अरविंद के बारे में उचित ही लिखा है कि वे व्यवस्था बदलने में विश्वास नहीं रखते।

वे जानते हैं कि व्यवस्था परिवर्तन की बात करते ही उनसे मीडिया का समर्थन भी छिन जाएगा। वे केवल सत्ता परिवर्तन चाहते हैं जिसमें उनका प्रभुत्व हो। मीडिया को टीआरपी चाहिए। इसलिए उसे तमाशों की जरूरत है। अरविंद और अन्ना उनके लिये तमाशों से ज्यादा कुछ भी नहीं है, जबकि मज़दूरों, किसानों आदि के प्रदर्शनों, रैली आदि को मीडिया द्वारा नज़रंदाज किया जाता है। या इनकी रैली व प्रदर्शनों को सड़कों पर जाम लगाने और जनता की असुविधाओं के पक्ष को प्रदर्शित किया जाता है। एक अन्य लेख 'बाल ठाकरे ; एक फासिस्ट जिसकी आत्मा अभी जिंदा है' में लेखक ने बाल ठाकरे व शिव सेना के उपेक्षित पक्ष को जनता के सामने लाकर सराहनीय कार्य किया है। वास्तव में उनके द्वारा मज़दूरों को धर्म, जाति व क्षेत्रीयता के नाम से आपस में लड़ा कर पूंजिपतियों व उद्योगपतियों को सहयोग दिया जाता है। जिस प्रकार पंजाब में अकाली दल को कमज़ोर करने के लिए कांग्रस ने जरनैल सिंह भिंडरावाले को खड़ा किया था, उसी प्रकार कम्युनिस्ट पार्टी का प्रभाव समाप्त करने के लिए बाल ठाकरे को पैदा किया। बाद में दोनों ही कांग्रेस के लिए सिरदर्द बने।

मनोज कुमार झा ने अपने लेख 'मोदी की हैट्रिक-पर क्या प्रधानमंत्री बन पायेंगे?' में भाजपा व मोदी की राजनीतिक स्थिति की वास्तविकता को सही रूप में पाठकों के सामने रखा है। भाजपा पर आरएसएस का पूर्ण प्रभुत्व स्थापित है और संघ व उद्योगपति प्रधानमंत्री के रूप में मोदी का नाम उछालने में उतावले हो रहे हैं चाहे एनडीए के घटक दल एनडीए से अलग क्यों न हो जाए। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने तो मोदी के विरूद्ध अपना रोष कई बार प्रकट किया है। दमकल विभाग से सम्बंधित लेख 'आग बुझने के बाद भी जलाते हैं निगमकर्मी' काफी चौकाने वाला है। आग बुझाने के लिए दमकल गाड़ियां पहुंचने का किराया पीड़ित व्यक्ति अथवा संस्था से लेना बिल्कुल अनैतिक तक व गैर वाज़िब है। संकट के समय पीड़ित की सहायता करना कल्याणकारी राज्य का नैतिक व कानूनी कर्तव्य है। जहां तक घूंसखोरी का सवाल है हरियाणा सरकार का कोई भी विभाग जिससे जनता का वास्ता पड़ता है घूंसखोरी से बचा हुआ नहीं है। वैसे पूरे देश का लगभग यही हाल है। इस संबंध में गौरतलब है कि फ्रांस में 1799 ई. में एक कमीशन ने अपनी रिपोर्ट में लिखा था कि ''सरकार का कोई भी विभाग घूसखोरी तथा अनैतिकता से मुक्त नहीं था''। जो दशा फ्रांस की 18 वीं शताब्दी में थी, लगभग वही दशा 21 वी शताबदी में भारत की है।

-डॉ. जे. के.गुप्ता, फरीदाबाद